क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज का गोंदिया महाधिवेशन और अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ का गठन ०९/०६/२०२० को हुआ था। इस संगठन के गठन के उद्देश्य तथा कार्य निम्नलिखित है :

- भारत में फैले ३६ कुल के पोवार/पंवार समाज जनों में संपर्क स्थापित कर एकता के सूत्र में बांधना तथा राष्ट्रीय स्तर पर एकता को मजबूत करना ।
- समाज के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना।
- क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज की सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक विकास सहित समग्र विकास में सहायता प्रदान करना।
- क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज में बोली जानेवाली हमारी बोली "पोवारी" के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कार्य करना ।
- पोवारी बोली के साहित्य को समृद्ध करना, आम जनमानस तक प्रचार प्रसार करना।
- पोवार समाज की सांस्कृतिक रीति-रिवाजों एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा करना।
- सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना, जनजागृति का प्रसार प्रचार करना।
- समाज के युवा एवं महिला वर्ग में शिक्षा का प्रचार करना एवं विविध योजनाओं तथा कौशल विकास पर मार्गदर्शन कर उनको संबल बनाना।
- किसानों की खुशाली हेतु कृषि विकास की विभिन्न योजनाएं कार्यक्रम क्रियान्वित करना ।
- समाज के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित करना।
- पोवारी लोककला और संस्कृति के संवर्धन के लिए विभिन्न पंवार बहुल स्थलों पर अधिवेशनों का आयोजन करना ।
- पोवार समाज की विलुप्त हो रही समृद्ध संस्कृति का संरक्षण करना।
- समाज के ऐतिहासिक तथ्यों की खोज कर समाज के विभिन्न स्तरों पर स्थानीय संघटनो की मदद से प्रसार प्रचार करना।
- पोवार / पंवार समाज के युवक युवतियों में सामाजिक शिक्षा का प्रचार प्रसार कर उनको पोवारी संस्कारों से परिपूर्ण करना।
- समाज के उत्थान हेतु अधारभूत संरचनाओं का विकास करना।
- समाज के हर वर्ग के कल्याण हेतु प्रशासन के सहयोग से विभिन्न कार्यक्रमों का क्रिन्यान्वयन करना।

- पोवार समाज के जातिनाम (पोवार/पंवार) के अपभ्रंश को रोकना तथा इसे स्थायित्व प्रदान करना.
- पोवार समाज मे नैतिक मूल्य समता भाव को प्रोत्साहन देना।
- पाश्चात्य संस्कृति से ह्रास होते मूल्यों को सहेजना।
- स्थानीय स्तर पर सामाजिक समितियों का गठन कर जनजागृति का प्रचार प्रसार करना।
- समाज के वरिष्ठ जनो का सत्कार कर मानसिक संबल प्रदान करना।
- समाज के विशिष्ट सेवा क्षेत्रो में कार्यरत समाजसेवीयो का आदर सत्कार कर प्रेरित करना।
- सामाजिक विकास हेतु साहित्यों के निर्माण एवं सरक्षण हेतु E_बुक, सॉफ्ट कॉपी, हार्ड कॉपी, पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा web मीडिया द्वारा ऑनलाइन सेमिनारो का आयोजन करना।
- समाज के विद्यार्थियों की आर्थिक कठिनाई को दूर करने हेतु उपाययोजना करना जैसे शिष्यवृत्ती, पारितोषिक, सरकारी योजनाओं आदि से उनका उत्साह बढ़ाना।
- उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए छात्रावास का निर्माण तथा संचालन।

मालवा राजपुताना से अठारवीं सदी में नगरधन होकर वैनगंगा क्षेत्र में बसे छत्तीस कुर के क्षत्रियों का संघ पोवार(पंवार) का अखिल भारतीय पोवार/पंवार महासंघ के तत्वाधान में दिनांक १२/१२/२०२१ के शुभ दिन प्रथम महाधिवेशन गोंदिया में सम्पन्न हुआ। क्षत्रिय पोवार/पंवार महासंघ ने समाज की ऐतिहासिक और गौरवशाली संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के साथ समाज के सर्वांगीण विकास हेतु समाज के सभी सदस्यों से मिलकर प्रयास करने का आह्वान किया।

पोवार महासंघ के अध्यक्ष डॉ विशाल बिसेन के नेतृत्व में समाज के युवाओं के द्वारा अपनी ऐतिहासिक विरासत को बचाते हुए समाजोत्थान हेतु पिछले डेढ़ साल में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। देश-दुनिया में फैले समाजजनों के साथ संवाद हेतु इस पंवार महासंघ ने अनेक ऑनलाइन कार्यक्रम किये और युवाओं के उत्थान हेतु युवा चेतना कार्यक्रम चलायें। ऐसे कार्यक्रम न केवल समाजजन अपितु देश के सभी युवाओँ के लिए बहुत ही लाभप्रद रहे हैं।

समाज की मातृभाषा पोवारी को बचाने के लिए पोवार महासंघ के द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है। महासंघ के द्वारा सम्राट विक्रमादित्य के राज्यारोहण और हिंदू नववर्ष के दिन को "पोवारी दिवस" के रूप में मनाने की शुरूवात की गयी। समाज के आदर्श महाराजा भोज के जन्मदिवस के दिन, "प्रथम पोवारी साहित्य सम्मेलन" का आयोजन किया गया। छत्तीस कुल के पोवारों के गोंदिया अधिवेशन में श्री शेखराम एडेकर जी द्वारा लिखित काव्यसंग्रह, पोवारी गौरव और श्री ऋषि जी बिसेन के द्वारा लिखित काव्यसंग्रह, पोवारी संस्कृति का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम में भविष्य में पोवारी बोली और इतिहास पर आने वाली दस से भी अधिक किताबों के कवर पेज का विमोचन किया गया। सुश्री वर्षाबाई पटले की लाक्तखाड़), श्री पालिकचंद बिसने की वलो वलो

भयेव व टुरी संभलकन रव्हणं, डॉ. हरगोविंदजी टेंभरे के काव्य संग्रह मोहतुर, डॉ.विशाल बिसेन जी की किताब पोवारोत्थान, श्री ऋषी बिसेन जी किताबें पोवारी बोली:एक परिचय और वैनगंगा क्षेत्रमा पंवार/पोवार, श्री रणदीप बिसने के काव्यसंग्रह तिरीप, श्री महेनजी पटले के द्वारा पोवार समाज के एतिहास पर आधारित किताब पोवार विश्लेषणात्मक अतीत, इंजि.गोवर्धनजी बिसेन की किताब मयरी, पोवारी काव्यसंग्रह, डॉ.प्रल्हाद हरीणखेड़े 'प्रहरी' की किताबें पंतूना और परी पोवारी, हिरदीलाल ठाकरे जी द्वारा रचित काव्य संग्रह पोवारी अभंग माला, इंजि.टी.एन.पारधी द्वारा रचित पसायदान ,पोवारी निरूपन के मुखपृष्ठ विमोचन के साथ इनकी जानकारी समाज को दी गयी। पोवार महासंघ ने सभी साहित्यकारों को निरंतर साहित्य लेखन करने हेतु प्रेरित किया है ताकि वे अपनी संस्कृति से आने वाली पीढ़ियों को परिचित करवा सके।

पोवार समाज के गोंदिया अधिवेशन में में समाज के सही इतिहास को जन जन तक पहुँचाने पर बल दिया गया। कई लोगों ने समाज के इतिहास को लिखने का प्रयास किया है लेकिन इतिहास की निजी मान्यता के अनुरूप व्याख्या करने से विकृति आ जाती है इसीलिये इसे ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ समाज की मान्यताओं के अनुरूप ही लिखा जाना चाहिए। पँवार महासंघ के माध्यम से यह प्रयास रहा है कि समाज का सही इतिहास सबके सामने रखा जाय।

हमारे पुरखे, क्षत्रियों का जत्था अठारवी सदी तक वैनगंगा क्षेत्र में पूरी तरह से बस चुका था जिसमें आज के जिले सिवनी, गोंदिया, बालाघाट और भंडारा आते है। इतने बड़े क्षेत्र में समाज का विस्तार होने के बावजूद सभी की समान संस्कृति आज भी कायम है। क्षत्रिय पंवार/पोवार महासंघ का यही प्रयास है कि इस पोवारी संस्कृति को संरक्षित किया जाया और सहित्यकारों तथा इतिहास लेखन करने वाले स्वजातीय सदस्यों से विशेष अपेक्षा है कि वे अपनी कलम की ताकत से इस कार्य को करें और समृद्ध पोवारी साहित्य का निर्माण करें।

गोंदिया अधिवेशन के एक भाग के रूप में पोवारी कवियों ने अपने काव्य प्रस्तुत किये। हमारे बहनों के द्वारा गाये पोवारी गीतों के माध्यम से अपनी संस्कृति को समझाते हुए श्री कोमलप्रसाद जी राहंगडाले ने समझाया कि किस प्रकार हमारे पुरातन पोवारी गीतों में अतीत के वैभव के दर्शन होते है। ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होते है और इन मौखिक गीतों में हमारे समाज के पँवारी वैभव के दर्शन होते हैं। आज कोई राजशाही तो नही रही किंतु समाज का गौरवशाली अतीत वर्तमान को उन्नत करने की प्रेरणा अवश्य देता है। इसी उद्देश्य से समाज के युवाओं की यह पहल की अपने गौरवशाली अतीत के प्रेरणा से वर्तमान को उन्नत बनाएंगे बहुत ही कारगर साबित हो रही है। पोवार महासंघ निरंतर इसी दिशा में कार्यरत है। आज इस बात की आवश्यकता है कि सभी समाजजनों को अपने सामाजिक सांस्कृतिक पहचान के बनाये रखते हुए समाजोत्थान हेतु पूरे मनोयोग से सहयोग करना होगा। क्षत्रिय पोवार/पंवार समाज के गौरवशाली अतीत और वर्तमान को बनाये रखना है और समाज को निरंतर प्रगति के पथ पर ले जाना है।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ